आर.एन.आई. रजि० नं० HRHIN/2003/10425
डाक पंजीकरण संख्या : P/RTK/10/2013-15

सृष्टि संवत् 1960853116
विक्रम संवत् 2072
दयानन्दाब्द 192

सेवा में,

महर्षि दयानन्द सरस्वती

ओ३म्

आर्य प्रतिनिधि

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा का साप्ताहिक मुखपत्र दूरभाष : 01262-216222, Mob. 8901387993
E-mail : aryapsharyana@gmail.com
Website : www.apsharyana.org
विदेश में वार्षिक शुल्क : 75 डॉलर विदेश में आजीवन शुल्क : 300 डॉलर सम्पादक : मा० रामपाल आर्य
वर्ष : 12 अंक : 8 रोहतक, 21 जुलाई, 2015 वार्षिक शुल्क : 150/- आजीवन 1500/-

स्वामी श्रद्धानन्द जी की विरासत से कोई खिलवाड़ नहीं होने देंगे–रामपाल आर्य

गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय हरिद्वार आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा, आर्य प्रतिनिधि सभा दिल्ली एवं आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब की संयुक्त सम्पत्ति है।

इन तीनों सभाओं द्वारा यू.जी.सी. को ऐसा कोई पत्र नहीं भेजा गया, जिसमें गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय हरिद्वार को सरकार में देने की बात लिखी गई हो, इस विषय में कुछ निराश व हताश लोग जो अपने आपको आर्य कहते हैं, समाज में भ्रम पैदा कर रहे हैं।

सभामन्त्री मा० रामपाल आर्य ने बताया कि 12 जुलाई 2015 को प्रात: 11 बजे 15-हनुमान रोड नई दिल्ली में दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा एवं आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के प्रधान व मन्त्रियों के इलावा डॉ० रामप्रकाश जी कुलाधिपति गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय हरिद्वार, डॉ० सुरेन्द्र कुमार जी कुलपति गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय हरिद्वार आदि सभाओं के प्रमुख व्यक्ति उपस्थित हुए। उन्होंने कहा कि स्वामी श्रद्धानन्द जी की इस गरिमापूर्ण विरासत को किसी भी हालत में सरकार को नहीं जाने देंगे।

सभामन्त्री ने कहा कि गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय हरिद्वार आर्यसमाज द्वारा संचालित था और रहेगा। उन्होंने बताया कि इस विषय में गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय हरिद्वार के कुलाधिपति वैदिक विद्वान् डॉ० रामप्रकाश का स्टैण्ड स्पष्ट है कि स्वामी श्रद्धानन्द जी की विरासत को हम सरकार को कैसे सौंप सकते हैं तथा वह सभाओं के निर्णय के साथ अपनी सहमति दे चुके हैं।

सभामन्त्री ने स्पष्ट करते हुए बताया कि तीनों स्वामिनी सभाओं के चाहे बिना, उनके प्रस्ताव के बिना स्वामी श्रद्धानन्द द्वारा स्थापित इस गौरवशाली संस्था को सरकार को सौंप देने का कोई प्रश्न ही पैदा नहीं होता। अभी इस प्रकार का प्रस्ताव न सरकार की ओर से प्रस्तावित है और न ही सभाओं का प्रस्ताव है, परन्तु भविष्य में कभी सरकार वास्तव में इस संस्था को अपने अधीन करना चाहे तो आर्यसमाज की शक्ति आज भी इतनी अधिक है कि इसके लिए सरकार को सोच पाना भी मुश्किल होगा। सभामन्त्री ने बताया कि यू.जी.सी. को पत्र लिखकर इसके सही स्वरूप की जानकारी दे दी गई। हम विश्व की आर्यजनता को आश्वस्त करना चाहेंगे कि गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय हरिद्वार की गरिमा और आर्यसमाज की प्रभुता से किसी प्रकार का समझौता नहीं किया जाएगा।

सत्यमेव जयते

❑ प्राचार्य अभय आर्य, रोहतक

ऋषि दयानन्द जी 'व्यवहारभानु' में संदेश देते हैं कि मिथ्या दोषारोपण करने वाले विद्यार्थी को कठोर दण्ड देना चाहिए। अब यहाँ विद्यार्थी के लिए भी ऐसा लिखा है, तो सोचिए कि जब बड़े ऐसा करें और वे भी स्वयं को आर्य कहने वाले तो उनके दण्ड की क्या सीमा होगी? अनेक बार मिथ्या दोषारोपण करने वाला सोचता है कि जिस पर उसने दोष मढा है, वह उसका क्या बिगाड़ पाया है, न ही अन्य लोग ही उसका कुछ बिगाड़ पाये हैं। ऐसा व्यक्ति कुछ लोगों चलाकर बड़ा इतराता है लेकिन वह भूल जाता है कि दण्ड देने वाली एक परम शक्ति भी है। उसकी न्याय-व्यवस्था से कब तक और कैसे बचेगा?

शराब का सेवन करने वाला व्यक्ति नशे में चूर शराब की हानियों को देख ही नहीं पाता, समझ नहीं पाता, वह बच नहीं पाता। उसी प्रकार मिथ्या दोषारोपण करने वाला व्यक्ति असत्यरूपी हलाहल विष का पान करके भी उसकी हानि को नहीं देख पाता है, न समझ पाता है और न बच पाता है। वह भले ही अपनी मित्र मंडली के साथ कितना ही इतराए, लेकिन पारखी लोग पहचान लेते हैं इसकी खुशी सब दिखावटी हैं। ऐसा व्यक्ति अन्दर से क्रूर, बेचैन, चंचल होता है। यह चलता फिरता विष का पुतला तथा सज्जन लोगों द्वारा त्याज्य होता है। धीरे-धीरे परमात्मा की न्यायव्यवस्था द्वारा ऐसे व्यक्ति को दण्ड भी मिलता है, लेकिन वह अपने समीप ही स्वयं की हो रही हानि को भी देख नहीं पाता और अन्त में समूल नष्ट होता है।

मैंने अनेक विद्यार्थी ऐसे देखे जो अध्यापक की आंख के सामने गलती करके पूछने पर कहते हैं कि उन्होंने ऐसा किया ही नहीं। इसी प्रकार बड़े भी ऐसे मिलते हैं जो जानते हैं कि जो आरोप तुम दूसरे पर लगा रहे हो, उसका कोई आधार नहीं है, फिर भी बड़ी बनावट से, योजना बनाकर, मेहनत शोर से यह उल्टा कर्म करके अपने लिए नरक के द्वार खोलते हैं और जब आर्यसमाज में यह वृत्ति जोर पकड़ने लगे तो शोक की दशा का कहना ही क्या? एक-दूसरे के विरुद्ध ऐसा प्रसंग आने पर झट से अब आर्यसमाज में ऐसी योजनाएं बनने लगती हैं। हैरानी की बात! ऐसी योजना बनाने वाले लोग जब यह सोचते होंगे कि केवल वही सच्चे आर्य हैं, केवल वे ही आर्यसमाज को नेतृत्व दे सकते हैं। हम भले ही ऐसी घटनाओं पर, ऐसी मिथ्या बातों पर अपनी पुष्टि के लिए चाणक्य नीति का आवरण ओढ़ लें, लेकिन उस समय हम ऋषि के सिद्धान्तों को अपनी आत्मा को उतार फैंकते हैं, हम स्वामी श्रद्धानन्द के विशुद्ध धार्मिक संदेश को पैरों तले रौंद रहे होते हैं। हम उस समय धर्म की गलत व्याख्या करके अपने महापाप को छुपाने का प्रयास करते रहते हैं।

दोषारोपण का दौर बन्द होगा? नेतृत्व व संगठनात्मक स्तर पर तो यह तुरन्त बंद हो। सभी ऋषि का प्रिय यह संदेश याद रखें।

सत्यमेव जयते नानृतं सत्येन पन्था विततो देवयानः।
येनाक्रमन्त्यृषयो ह्याप्तकामा यत्र तत्सत्सस्य परमं निधानम्॥

चतुर्मास अर्थात् चौमासे में फैली भ्रान्त धारणाएँ कितनी सच्ची? कितनी झूठी?

❑ गंगाशरण आर्य (साहित्य सुमन)

वास्तव में प्राचीन ऋषि परम्परा के अनुसार चौमासा अर्थात् इन बरसात के दिनों में वनों से पर्वतों से गए हुए वानप्रस्थी, संन्यासी वृन्द, विद्वान् (ऋषि-मुनि लोग) जिनको पितर कहा जाता था, वेदज्ञान को आधार बनाकर वैदिक सत्संग किया करते थे। जब वे बरसात के बाद वापिस अपने वन, आश्रमों में लौटते थे तो उनके जाने को देव उठना (देव उठनी ग्यास) कहा जाता है। पितृपक्ष—विदाई के बाद घरों में सफाई करके दीपावली पर नवसस्येष्टि (नए अन्न के द्वारा) यज्ञ करके फिर जिसको शादी-विवाह करने हैं वह शादी-विवाह करे, जिसे व्यापार करना है, वे व्यापार करें, क्योंकि बरसात के कारण बन्द हुए सब रास्ते खुल जाते हैं। वर्षाकाल समाप्त हो जाता है। उसके बाद सब अपने-अपने कार्यों में लग जाते हैं। **चौमासे को लेकर लोगों में अनेक भ्रान्त धारणाएं दीर्घकाल से रची-बसी हुई हैं** जैसे चौमासे के प्रारम्भ में लोग कहते हैं कि देव सो गये हैं वर्षा के कारण विवाह आदि भी इन दिनों में नहीं किया करते हैं। विचार करने की बात है देवता कभी सोते ही नहीं हैं, क्योंकि यह मान्यता अवैज्ञानिक है। हमारे जड़ देवताओं में सूर्य, चन्द्रमा, वायु, अग्नि, नक्षत्र आदि हैं, जो अपने नियम को कभी नहीं छोड़ते। अपने कार्य में लीन रहते हैं और चेतन देवताओं में माता-पिता, गुरु, आचार्य, पत्नी के लिए पति व पति के लिए पत्नी और परमपिता परमेश्वर ये चेतन देवता हैं, ये भी लम्बे समय तक नहीं सो सकते और परमेश्वर तो कभी सोता ही नहीं है, फिर बताओ कौन से देव सो गए? क्योंकि यदि इनमें से कोई भी देवता सो गया तो संसार के सारे कार्य कैसे चलेंगे? मान लो अग्निदेव सो गये हैं तो अग्नि में हाथ डालकर देखो जलना नहीं चाहिए क्योंकि यदि अग्निदेव सो गया है तो अपना कार्य छोड़ देगा और अग्नि का कार्य है जलाना। इसी प्रकार सारे देवता अपने-अपने काम नियम से कर रहे हैं जो कभी उसी प्रकार बन्द नहीं होते जैसे हमारे शरीर रूपी ब्रह्माण्ड के अन्दर के सारे अंग-प्रत्यंग हृदय, लीवर आदि दिन-रात काम करते रहते हैं। यदि हृदय ने काम करना बन्द कर दिया तो हमारा शरीर निष्क्रिय हो जायेगा। ऐसे ही यदि उपरोक्त देवता सो गए तो संसार कैसे चलेगा? अतः अन्धविश्वास में न फँसें, क्योंकि वास्तविक देवताओं से तो अब हमारा नाता रहा नहीं अब तो काल्पनिक देवताओं की भरमार है। अब देवता (वेदज्ञान देने वाले) तो रहे नहीं अब लेवता-लेवता रह गए जो भोली-भाली जनता को झूठ-मूठ बहका करके पितृ तर्पण या मृतक श्राद्ध के नाम पर खुद ही सारा सामान गृहस्थियों का लेने लगे। एक तरफ तो यह कहते हैं कि चार महीनों तक देवता सो जाते हैं किन्तु दूसरी तरफ श्रावण मास में सोमवारों को मन्दिरों में भगवान शिव का अभिषेक कराते हैं—जल अभिषेक, दुग्ध अभिषेक आदि। यहाँ तक कि कई पण्डित लोग तो 'भांग' नामक मादक पदार्थ भी देवता पर चढ़वा देते हैं। पुरुष ही नहीं नारियां तक श्रावण मास में विभिन्न तीर्थों में जाकर वहां से जल कलशों की कावड़ लाते हैं। सैकड़ों मील की पद यात्रा कर-कर वे कावड़ लाकर मन्दिरों में शिवजी की प्रतिमाओं पर चढ़ाते हैं। बड़े जोश-खरोश के साथ समूहबद्ध होकर प्रत्येक सोमवार को शिव का विशेष अधिषेक (स्नान) करते हैं। यह सब किया जा रहा है फिर भी यह कहा जाता है कि देवता सो रहे हैं। इस प्रकार हमारे ऊपर गलत परम्पराओं के लेप पर लेप चढ़ते गए और हम वास्तविकता से अर्थात् मूल स्वरूप से बहुत दूर भटककर अज्ञान-अविद्या के गर्त में चले गए। यह भी विचारणीय है कि सोते हुए व्यक्ति पर जल या दूध डालना कोई अच्छी बात नहीं है? फिर वह तो देवता है तो ये कैसी बुद्धिमानी है? इसके अलावा यदि सभी देवता सो गए तो पुजारी भाई मंदिरों में ताले लगाकर क्यों नहीं चले जाते? पुजापे के लिए क्यों बैठे रहते हैं।

श्राद्ध और भ्रान्त धारणा-

श्राद्ध के ही दिन अशुभ क्यों? शुभ दिनों में शुभ कर्म करने चाहिये इसका अर्थ यह हुआ कि अशुभ दिनों में अशुभ कार्य करने की पूरी छूट है। सच तो यह है कि कोई भी दिन शुभ-अशुभ नहीं होते, मनुष्य के कर्म ही शुभ-अशुभ होते हैं। ईश्वर ने सभी दिन शुभ बनाये हैं, उसमें शुभ कर्म करो या अशुभ करो, आप पर निर्भर करता है। शुभ दिनों में शुभ कार्य करने चाहियें और अशुभ दिनों में अशुभ कर्म करने चाहिएं ऐसा कहीं नहीं लिखा। जब हम शुभ कर्म करते हैं तो उनका फल भी शुभ मिलता है और जब हम अशुभ दिनों में अशुभ कर्म करने चाहियें ऐसा कहीं नहीं लिखा। जब हम शुभ कर्म करते हैं तो उनका फल भी शुभ मिलता है और जब हम अशुभ कर्म करते हैं तो उसका फल भी अशुभ अर्थात् दुःख रूप में मिलता है। सब दिन बराबर होते हैं, ऋतुओं के आधार पर दिन गर्म और शीतल होते हैं बारिश के दिनों में बारिश होती है। बरसात के कारण आप स्वयं बाहर नहीं गए काम नहीं किया तो दोष बारिश पर मढ़ते हैं?

श्राद्ध के 15 दिनों में विवाह आदि नहीं करते-कराते व विवाहित लड़की इन दिनों में अपने ससुराल नहीं भेजते अपशकुन मानते हैं। यह एक बड़ी भ्रान्ति है। क्या इन दिनों में मुस्लिम-यहूदी-ईसाइयों के घरों में शादियां नहीं होती? केवल हिन्दू ही ऐसा मानते हैं। उनके लिए श्राद्ध के दिन अशुभ माने जाते हैं। क्या श्राद्ध में अशुभ दिनों में हम खाना नहीं खाते? क्या व्यापार नहीं करते? क्या इन दिनों में बच्चे पैदा नहीं होते? क्यों इन दिनों में लोग नहीं मरते? सबसे ज्यादा गऊएं इन्हीं पितृपक्ष के दिनों में गऊ ग्रास के नाम पर (हलवा-पूरी खाकर) मर जाती हैं। क्या श्राद्ध में सूर्य-चन्द्रमा, ग्रह-उपग्रह अपने सब कार्य रोक देते हैं? जब सब निर्धारित ढंग से होते हैं तो पितरों को भोजन कराने के लिए ब्राह्मण भोज श्राद्ध के 15 अशुभ दिनों में ही क्यों कराते हैं? क्या वर्ष के शेष 350 दिन शुभ कहलाने पर ही पितर उनमें भोजन करने नहीं आते? अतः इन 15 दिनों को अशुभ मानने वालों के पास इन दिनों को अशुभ मानने का कोई ठोस आधार नहीं है।

ईश्वर की रचना पर शक करना, शंका करना, संशय करना, भ्रान्ति करना, भ्रम करना, वहम करना—यही पाप कर्म है, यही अशुभ है। मैं उन लोगों से पूछना चाहता हूँ कि जो लोग कुछ दिनों को अशुभ मानते हैं तो क्या अशुभ दिनों में अशुभ कर्म कर सकते हैं? क्या ऐसा करने से अशुभ कार्य शुभ बन जाते हैं?

जिस घर में मृत्यु होती है, कहते हैं उस घर में सदस्यों को सन्ध्या, हवन, पूजा नहीं करनी चाहिये कितनी बेतुकी बातें हैं। जिस घर में मौत होती है वहाँ तो सन्ध्या-हवन प्रतिदिन करना चाहिए। इन 10-12 दिनों में जितने शुभ कर्म कर सकते हैं करने चाहियें। इससे घर में धैर्य-सन्तोष रहता है, आत्मिक बल बढ़ता है, दिवंगत आत्मा के जाने के दुःख का प्रभाव कम होता है, मन की शान्ति बनी रहती है, घर के वातावरण में शुद्धता, पवित्रता बनी रहती है। अब बुद्धिमान् लोग ही निर्णय करें कि क्या ऐसे शुभकर्म करना अशुभ हैं। मृतक के परिवार वाले ऐसे मातम भरे माहौल में आने वाले लोगों के लिए हुक्का व प्लेट में बीड़ी-सिगरेट रखकर उनका स्वागत करते हैं और खूब ठट्ठेबाजी करते हैं। यह अशोभनीय कार्य शुभ समझा जाता है। इससे ज्यादा और निकृष्टता क्या होगी? लोग जरा भी विचारते नहीं। यज्ञ-हवन-सन्ध्या इत्यादि करने से तो मृतक के परिवार के लिए शुभ ही होता है क्योंकि मृतक की वायु से जो वातावरण अशुद्ध हुआ है वह शुद्ध हो जाता है, लेकिन हुक्का, बीड़ी-सिगरेट आदि परोसने पर तो परिवार का तो कल्याण हो ही नहीं सकता बल्कि जिसे परोस रहे हैं यदि वह उसका सेवन करें तो उसके स्वास्थ्य के लिए भी हानिकर होता है। वैदिक सिद्धान्तानुसार ईश्वर सर्वज्ञता से सृष्टि की रचना करता है और ईश्वर जो कुछ करता है सब जीवों के हित के लिए करता है। वह कभी भी अशुभ नहीं करता। किसी भी दिन को शुभ या अशुभ नहीं कहा जा सकता। शुभ-अशुभ तो हमारे कर्म होते हैं जिनके फलस्वरूप हमारा भोग होता है। यदि किसी ने अपने जीवन को यज्ञ की सुगन्धि से सजाकर अच्छे उत्पादों का प्रयोग कर जीवन की आयुसीमा बढ़ाने के साधन बढ़ाए हैं तो फलस्वरूप मृत्यु बिना कारण उसका वरण नहीं करेगी। जिसने अशुभ कर्म किये तो फलस्वरूप शरीर छोड़ने का दुःख भोगा और जिसने शुभ कर्म किये उसने नाना प्रकार के सांसारिक सुख प्राप्त किये। मन भी आनन्दित रहा। जब एक चोर किसी के घर में चोरी करता है तो वह दिन चोर के लिए शुभ बन जाता है और जिसके घर में चोरी होती है, उसके लिए वही दिन अशुभ होता है, फिर एक ही दिन को शुभ या अशुभ कैसे मान सकते हैं? **किसी भी दिन या सप्ताह या महीने को अशुभ बताना मूर्खता का परिचय देना है—ईश्वर**

क्रमशः पृष्ठ 7 पर...

ओ३म्

प्राणसाधना जीवरसार

-: वेद-मन्त्र :-

प्रति त्य चारुमध्वरं गोपीथाय प्र हूयसे।
मरुद्भिरग्न आ गहि॥ 6॥ (सामवेद)

[त्यं] उस [चारुं] चरणीय, करने के योग्य (चर गतौ) [अध्वरं प्रति] हिंसा रहित यज्ञ में [गोपीथाय] इन्द्रियों की रक्षा के लिए (गाव: इन्द्रियाणि, पीथं=पानम्) हे [अग्ने] आप [प्रहूयसे] हमारे से पुकारे जाते हैं। मनुष्य का कर्त्तव्य है कि अपनी प्रत्येक इन्द्रिय से यज्ञ=उत्तम कर्मों का अनुष्ठान करे। यही उसका कर्त्तव्य है। उसकी यही दिनचर्या होनी चाहिए। इसी बात को मन्त्र का 'चारु' शब्द व्यक्त कर रहा है। हमारा कोई भी कार्य हिंसा की प्रवृत्तिवाला न हो। कार्य की श्रेष्ठता व यज्ञरूपता की यही कसौटी है। 'अ-ध्वर'=नहीं हिंसा। हमारे कार्य अधिक से अधिक प्राणियों का भला करने वाले हों। परन्तु मनुष्य मात्र का यह अनुभव है कि इन इन्द्रियों पर आसुर वृत्तियों का आक्रमण होता है और ये इन्द्रियां यज्ञों को छोड़ ध्वंसक कार्यों में लग जाती हैं। सो यज्ञ में प्रवृत्त इन इन्द्रियों की रक्षा के लिये हम प्रभु को पुकारते हैं। प्रभु का स्मरण ही आसुर वृत्तियों के दूर करने का उपाय है।

मन्त्र में उस प्रभु से प्रार्थना है कि हे प्रभो! [मरुद्भि:] प्राणों के साथ [आगहि] आइये, हमें प्राप्त हूजिये। इस प्रकार वेद का यह संकेत स्पष्ट है कि इन्द्रिय रक्षा के लिये प्राणों की साधना ही उपाय है। उपनिषदों का कथानक है कि असुर सब इन्द्रियों को आक्रान्त कर परास्त कर सके। पर जब वह प्राणों पर आक्रमण करने लगे तो इस प्रकार उनका ध्वंस हो गया जैसे कि पत्थर से टकरा कर मिट्टी के ढेले का। सो हम प्राणों की साधना द्वारा इन्द्रियों का संयम कर यज्ञ को नष्ट न होने दें। भोगवाद क्षणिक प्रीति का हेतु होता हुआ भी अनुपादेय है। प्राण साधना द्वारा इन्द्रिय संयम ही श्रेयोमार्ग है। बिरले धीर ही इसे अपनाते हैं। हम भी उन्हीं बिरले धीरों में से एक होते हुए इस मन्त्र के ऋषि 'मेधातिथि' बनें।

भावार्थ—प्राण साधना से जितेन्द्रिय बन जीवन को यज्ञमय बनाओ।

—आचार्य बलदेव

आचार्य वेदमित्र जी के यज्ञ व उपदेश कार्यक्रम

1. स्मृति दिवस पर यज्ञ उपदेश सम्पन्न

दिनांक 7 जून 2015 को शहीद कृष्ण गांव मोखरा जिला रोहतक का स्मृति दिवस मनाया गया। आर्यजगत् के विख्यात वक्ता आचार्य वेदमित्र जी पतञ्जलि योगाश्रम भऊ रोहतक के सान्निध्य में बृहद् यज्ञ हुआ। शहीद के सुपुत्र विकास मुख्य यजमान थे। आचार्य जी ने वेद में 'ब्रह्म च क्षत्रं' मन्त्र पर बोलते हुए परोपकार को सर्वोत्तम कर्म बतलाया। परमेष्ठि यानि वेदप्रचारक आचार्य तथा राष्ट्ररक्षक राजा समाज को सुख व समृद्धि देते हैं। भारत में आज भी ये पद बालकों तक आदर प्राप्त हैं। कार्यक्रम में युवा, वृद्ध तथा माताएँ आदि सम्मिलित थीं। युवाओं ने जनेऊ भी धारण किये।

2. सफल वृष्टियज्ञ सम्पन्न

दिनांक 9 से 12 जुलाई 2015 को भव्य वार्षिकोत्सव आर्यसमाज मन्दिर भऊ आर्यपुर रोहतक की विशाल यज्ञशाला में सम्पन्न हुआ। चारों दिन आचार्य वेदमित्र जी के ब्रह्मत्व में 30 जोड़े यजमान दम्पति अति श्रद्धा से प्रतिदिन आहुति देते रहे। आचार्य जी ने सभी को यज्ञोपवीत प्रदान करवा कर महीने में अमावस्या, पूर्णिमा को घर पर यज्ञ करने का संकल्प दिलवाया। अनेक युवाओं के अतिरिक्त स्त्री-पुरुषों ने भी जनेऊ धारण किये। पं० कुलदीप बिजनौर व बहन अंजलि आर्या तथा भीष्म आर्य के मधुर भजन हुए। श्री रोहतास आर्य, श्री जगदेव आर्य, श्री हवासिंह आर्य, श्री राजेन्द्र शास्त्री महम, श्री राजेन्द्र आर्य व श्री बलवान प्रधान मोखरा, श्री सूरजमल मुरादपुर, श्री प्रवीण मदीना, श्री कृष्ण पहलवान भाली ने दल-बल के साथ कार्यक्रम की शोभा बढ़ाई। पूर्णाहुति पर भारी वर्षा से सब प्रसन्न हुए। आर्य युवाओं ने सभी प्रबन्ध अति उत्साह से किया।

3. बृहद् यज्ञ व उपदेश सम्पन्न

दिनांक 12 जुलाई 2015 को रिठाल जिला रोहतक में बृहद् यज्ञ किया गया। यज्ञ ब्रह्मा आचार्य वेदमित्र जी ने यज्ञ के लाभों का वर्णन किया। परिवार तथा गांव के यज्ञमय वातावरण से सभ्यता, दान भावना, सहयोग तथा मानसिक प्रसन्नता प्राप्त होती है। श्री अमित जी के प्रबन्ध से अत्यधिक भीड़ में भी सुव्यवस्था रही।

सत्यार्थप्रकाश प्रश्नोत्तरी

द्वितीय समुल्लास के प्रश्नोत्तर

❑ कन्हैयालाल आर्य, कोषाध्यक्ष आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा

गतांक से आगे....

प्रश्न 249. जो वेद के स्वर और पाठमात्र पढ़ के अर्थ नहीं जानता, वह कैसा है?

उत्तर-जो वेद के स्वर और पाठमात्र पढ़ के अर्थ नहीं जानता, वह जैसे वृक्ष डाली, पत्ते, फल, फूल और अन्य पशु धान्य आदि का भार उठाता है, वैसे भार को उठाने वाला है।

प्रश्न 250. जो वेद को पढ़ता और उसका यथावत् अर्थ जानता है, उसे क्या मिलता है?

उत्तर-वह ज्ञान से पापों को छोड़ पवित्र धर्माचरण के प्रताप से सम्पूर्ण आनन्द को प्राप्त होके, देहान्त के पश्चात् सर्वानन्द को प्राप्त होता है।

प्रश्न 251. अविद्वान् कौन हैं? यह वेदविद्या किसके लिए है?

उत्तर-अविद्वान् वे हैं जो सुनते हुए नहीं सुनते, देखते हुए नहीं देखते, बोलते हुए नहीं बोलते। अविद्वान् लोग इस वेदविद्या वाणी के रहस्य को नहीं जान सकते किन्तु जो शब्द, अर्थ और सम्बन्ध का जानने वाला है, उसके लिए विद्या अपने स्वरूप को प्रकाशित करती है, अविद्वानों के लिए नहीं।

प्रश्न 252. जो कुछ पढ़ना व पढ़ाना हो, वह अर्थज्ञान सहित करने से क्या लाभ है?

उत्तर-जो वेदों को पढ़ के धर्मात्मा योगी होकर उस ब्रह्म को जानते हैं, वे सब परमेश्वर में स्थिर होकर मुक्ति रूपी परमानन्द को प्राप्त होते हैं। इसीलिए जो कुछ पढ़ना व पढ़ाना हो, उसे अर्थज्ञानसहित होना चाहिए।

प्रश्न 253. ऋषिकृत (आर्य) ग्रन्थों को क्यों पढ़ें और अनार्ष ग्रन्थों को पढ़ने से क्या हानि है?

उत्तर-ऋषिकृत (आर्य) ग्रन्थों को इसलिए पढ़ना चाहिए क्योंकि वे बड़े विद्वान्, सब शास्त्रविद् और धर्मात्मा थे और अनृषि अर्थात् जो अल्पशास्त्र पढ़े हैं और जिनका आत्मा पक्षपात सहित है, उनके बनाये हुए ग्रन्थ भी वैसे ही हैं।

प्रश्न 254. कौन-कौन-से ग्रन्थों को पढ़ना चाहिए?

उत्तर-1. चार वेद-ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद, अथर्ववेद, 2. चार ब्राह्मण ग्रन्थ-ऐतरेय, शतपथ, साम और गोपथ, 3. छ: वेदांग-शिक्षा, कल्प, व्याकरण, निघण्टु-निरुक्त, छन्द, ज्योतिष, 4. छ: शास्त्र (दर्शन)-योग, सांख्य, न्याय, मीमांसा, वैशेषिक, वेदान्त, 5. चार उपवेद-आयुर्वेद, धनुर्वेद, गान्धर्ववेद, अर्थवेद। इनमें भी वेद ईश्वरकृत होने से निर्भ्रान्त स्वत: प्रमाण हैं अर्थात् वेद का प्रमाण वेद से है।

प्रश्न 255. कौन-कौन-से ग्रन्थों को नहीं पढ़ना चाहिए?

उत्तर-1. व्याकरण में कातन्त्र, सारस्वत, चन्द्रिका, मुग्धबोध, कौमुदी, शेखर, मनोरमा आदि, 2. कोश में अमरकोशादि, 3. छन्दोग्रन्थों में वृत्तरत्नाकरादि, 4. ज्योतिष में शीघ्रबोध, मुहूर्त चिन्तामणि आदि, 5. काव्य में नायिकाभेद, कुवलयानन्द, रघुवंश, माघ, किरातार्जुनीयादि, 6. योग में-हठ-प्रदीपिकादि, 7. मीमांसा में धर्मसिन्धु, व्रतार्कादि, 8. वैशेषिक में तर्कसंग्रहादि, 9. न्याय में जगदीशी आदि, 10. सांख्य में सांख्यतत्त्वकौमुदी आदि, 11. वेदान्त में योगवशिष्ठ, पंचदश्यादि, 12. वैद्यक में शारङ्गधरादि, 13. स्मृतियों में मनुस्मृति के प्रक्षिप्त श्लोक और अन्य सब स्मृति, सब तन्त्र ग्रन्थ, 14. सब पुराण, सब उपपुराण, तुलसीदास कृत भाषा रामायण, रुक्मिणी मंगलादि और सर्वभाषा ग्रन्थ ये सब कपोल-कल्पित मिथ्या ग्रन्थ हैं।

प्रश्न 256. अनार्ष ग्रन्थ क्यों नहीं पढ़ने चाहिएं?

उत्तर-अनार्ष ग्रन्थों में कुछ तो थोड़ा सत्य होता है परन्तु इसके साथ असत्य अधिक होता है। जैसे अति उत्तम अन्न थोड़ा-सा विष होने पर भी छोड़ने योग्य है, जबकि इन ग्रन्थों में असत्य रूपी विष अधिक है, अत: पूर्णरूप से त्याज्य हैं। **प्रश्न 257.** क्या इतिहास को नहीं मानना चाहिए?

उत्तर-इतिहास तो मानते हैं परन्तु सत्य इतिहास को मानते हैं, मिथ्या को नहीं।

प्रश्न 258. कौन-कौन-से इतिहास ग्रन्थ सत्य और मिथ्या हैं?

उत्तर-जो ऐतरेय, शतपथ, साम, गोपथ ब्राह्मण हैं, उन्हीं के इतिहास, पुराण, कल्प, गाथा और नाराशंसी पांच नाम सत्य हैं, श्रीमद्भागवतादि का नाम पुराण नहीं। क्रमश: अगले अंक में...

दलित स्त्रियों के उत्थान में महर्षि दयानन्द का योगदान

❑ मनमोहन कुमार आर्य

महर्षि दयानन्द ने अपने जीवनकाल में देश में सर्वांगीण क्रान्ति की थी। वर्णाश्रम व्यवस्था में आये प्रदूषण को उन्होंने दूर किया। उन्होंने समाज में व्यवहृत जन्मना वर्णाश्रम वा जाति-व्यवस्था के दोशों को वेदों एवं वैदिक साहित्य के आधार पर युक्ति व तर्क के आधार पर व्यवहारिक रूप में प्रस्तुत किया जो महाभारतकाल से पूर्व वैदिक काल में रहा था। मध्यकाल में वैदिक धर्म में आयी मूर्तिपूजा, अवतारवाद, फलितज्योतिष, मृतक श्राद्ध, यज्ञों में पशुहिंसा, मानव बलि आदि अनेक बुराइयों की तरह वर्णाश्रम व्यवस्था में भी परिवर्तन व विकृतियां उत्पन्न हुईं। महर्षि दयानन्द ने वेदों के द्वारा प्रोक्त शूद्रों को ईश्वर वा पुरुष के पाद के समान होने के वेद मन्त्र से अवगत कराते हुए बताया कि वेद के अनुसार ईश्वर वा पुरुष के शिर=ब्राह्मण, बाहु=क्षत्रिय, उदर=वैश्य व पाद=शूद्र के समान हैं। क्या कोई व्यक्ति अपने बाहू, उदर व पैरों का तिरस्कार कर इन्हें हेय मान सकता है? मानव शरीर के यह चारों भाग जीवन के प्रथम दिन से अन्तिम दिन तक सुसंगठित रहते हैं। यदि इनमें वैषम्य आता है तो शरीर रोगी होकर मृत्यु को प्राप्त होता है। हमारा प्रश्न है कि क्या कोई ब्राह्मण कहलाने वाला व्यक्ति यह कह सकता है कि मेरा शिर श्रेष्ठ है और मेरे हाथ, उदर व पैर हेय व अस्पर्शय है? वस्तुतः मध्यकाल में वर्णाश्रम व्यवस्था का जो स्वरूप परिवर्तन किया गया उसमें बुद्धि को ताक पर रखकर कुछ अज्ञानी व स्वार्थी लोगों ने यह परिवर्तन व विकृतियां उत्पन्न कीं। यह आश्चर्य होता है कि सारा देश ही इस जन्मना जातिप्रथा का शिकार बन गया और हमारे दलित बन्धु इससे सर्वाधिक पीड़ित हुए। सदियों तक ऐसा होता रहा और किसी वैदिक सनातनधर्मी विद्वान व महात्मा ने इसका विरोध नहीं किया? वस्तुतः इसे मानवीय बुद्धि का बहुत बड़ा पतन कह सकते हैं। महर्षि दयानन्द को इस बात का श्रेय है कि उन्होंने इस समस्या से जुड़े हर पहलू पर खुले हृदय से विचार किया, उसे भली प्रकार से समझा और इसमें स्वार्थी लोगों ने जो विकृतियां उत्पन्न कीं थीं, उसका संशोधन व परिमार्जन किया। उन्होंने अपने समय में वर्णाश्रम व्यवस्था के प्रभाव जानकर इसे "मरण व्यवस्था" बताया और कहा कि देखें कि इस डाकिनी से क्या हमारा व हमारे समाज का पीछा छूटता भी है या नहीं? यह प्रसन्नता की बात है कि आज वर्णाश्रम व्यवस्था पर महर्षि दयानन्द जी के तार्किक व समाज के हितकारी विचारों को हमारे देश के सभी लोगों ने स्वीकार कर लिया है। आज मध्यकालीन वर्णव्यवस्था व उसके मध्यकालीन स्वरूप का समर्थक शायद ही देश में कोई व्यक्ति हो? तथापि आज भी इसका प्रभाव समाप्त नहीं हुआ है।

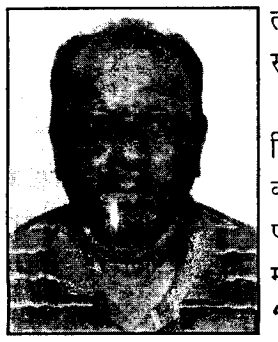

महर्षि दयानन्द ने दलित स्त्रियों के उद्धार के लिये क्या किया?, हम इस विषय पर विचार कर रहे हैं। महर्षि दयानन्द के सामने **"स्त्री शूद्रो नाधीयताम्"** सूक्ति का बहुत प्रयोग पण्डित लोग किया करते थे। इसका अर्थ है कि स्त्री और शूद्र न पढ़ें या इन्हें अध्ययन का अधिकार नहीं है। महर्षि दयानन्द सत्यार्थप्रकाश के चौथे समुल्लास में इसका प्रतिवाद कर कहते हैं कि सब स्त्री और पुरुष अर्थात् मनुष्यमात्र को पढ़ने का अधिकार है। तुम (पण्डितजन) कुवें में पड़ो और यह श्रुति तुम्हारी कपोलकल्पना से हुई है (वा मनघड़न्त है)। इसका तात्पर्य है कि यह सूक्ति किसी प्रामाणिक ग्रन्थ की रचना नहीं है। शायद इसी बात का प्रभाव रहा हो जिससे महर्षि दयानन्द को आर्यसमाज का एक नियम बनाना पड़ा कि **"अविद्या का नाश और विद्या की वृद्धि करनी चाहिये।"** महर्षि दयानन्द ने हजारों वर्ष से चली आ रही इस अन्यायपूर्ण मान्यता व सिद्धान्त, कि स्त्री व शूद्रों को पढ़ने का अधिकार नहीं है, का खण्डन कर सभी स्त्रियों व शूद्र बन्धुओं पर महान उपकार किया है जिससे इनके भविष्य में होने वाले शोषण व अन्याय से रक्षा हो सकी है।

महर्षि दयानन्द कहते हैं कि सब मनुष्यों के वेदादिशास्त्र पढ़ने सुनने के अधिकार का प्रमाण यजुर्वेद के छब्बीसवें अध्याय का दूसरा मन्त्र है। यह मन्त्र है **'यथेमां वाचं कल्याणीमावदानि जनेभ्यः। ब्रह्मराजन्याभ्यां शूद्राय चार्याय च स्वाय चारणाय।।'** मंत्र में परमेश्वर ने कहा है कि (यथा) जैसे मैं (जनेभ्यः) सब मनुष्यों के लिये (इमाम्) इस (कल्याणीम्) कल्याण अर्थात् मनुष्यों को मुक्ति का सुख देने वाली (वाचम्) ऋग्वेदादि चारों वेदों की वाणी का (आवदानि) उपदेश करता हूं, वैसे तुम भी किया करो। वह इसी क्रम में लिखते हैं कि यहां कोई ऐसा प्रश्न करे कि जन शब्द में द्विजों का ग्रहण करना चाहिये, क्योंकि स्मृत्यादि ग्रन्थों में ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य ही के वेदों के पढ़ने का अधिकार लिखा है, स्त्री और शूद्रादि वर्णों का नहीं। इसका वह उत्तर देते हुए कहते हैं कि देखो परमेश्वर स्वयं कहता है कि हमने ब्राह्मण, क्षत्रिय (अर्य्याय) वैश्य (शूद्राय) शूद्र और (स्वाय) अपने भृत्य वा स्त्रियादि (अरणाय) और अतिशूद्रादि के लिये भी वेदों का प्रकाश किया है अर्थात् सब मनुष्य वेदों को पढ़-पढ़ा और सुन-सुनाकर, विज्ञान को बढ़ाके, अच्छी बातों का ग्रहण और बुरी बातों को त्यागकर, अनावश्यक दुःखों से छूटकर, आनन्द को प्राप्त हों। कहिये, अब तुम्हारी बात मानें वा परमेश्वर की। परमेश्वर की बात अवश्य माननीय है। इतने पर भी जो कोई इसको न मानेगा वह नास्तिक कहावेगा, क्योंकि **'नास्तिको वेदनिन्दकः'**। वेदों का निन्दक और न मानने वाला नास्तिक कहाता है। क्या परमेश्वर शूद्रों का भला करना नहीं चाहता? क्या ईश्वर पक्षपाती है कि वेदों के पढ़ने-सुनने का शूद्रों के लिये निषेध और द्विजों के लिये विधि करे? जो परमेश्वर का अभिप्राय शूद्रादि के पढ़ाने-सुनाने का न होता तो इनके शरीर में वाक् और श्रोत्र इन्द्रिय क्यों रचता? जैसे परमात्मा ने पृथिवी, जल, अग्नि, वायु, चन्द्र, सूर्य्य और अन्नादि पदार्थ सब के लिये बनाये हैं, वैसे ही वेद भी सबके लिये प्रकाशित किये हैं और जहां कहीं निषेध किया है, उस का यह अभिप्राय है कि जिसको पढ़ने-पढ़ाने से कुछ भी न आवे, वह निर्बुद्धि और मूर्ख होने से शूद्र कहलाते हैं। उसका पढ़ना-पढ़ाना व्यर्थ है। महर्षि दयानन्द इसी क्रम में यह भी लिखते हैं कि जो स्त्रियों के पढ़ने का निषेध करते हों वह तुम्हारी मूर्खता, स्वार्थता और निर्बुद्धिता का प्रभाव है।

महर्षि दयानन्द और पौराणिक परम्परा भी वेदों को परम प्रमाण मानती है। स्त्रियों को वेदों के अध्ययन का अधिकार है, इसका अन्य प्रमाण महर्षि दयानन्द ने सत्यार्थ प्रकाश में ही प्रस्तुत किया है जो कि अथर्ववेद का 3/24/11/18 मन्त्र है। इस मंत्र **'ब्रह्मचर्य्येण कन्या युवानं विन्दते पतिम्।'** का अर्थ है कि जैसे लड़के ब्रह्मचर्य्य सेवन से पूर्ण विद्या और सुशिक्षा को प्राप्त होके युवती, विदुषी, अपने अनुकूल, प्रिय, सदृश स्त्रियों के साथ विवाह करते हैं, वैसे (कन्या) कुमारी (ब्रह्मचर्य्येण) ब्रह्मचर्य्य सेवन से वेदादिशास्त्रों को पढ़, पूर्णविद्या और उत्तम शिक्षा को प्राप्त युवती होके पूर्ण युवावस्था में अपने सदृश, प्रिय, विद्वान् (युवानम्) पूर्ण युवावस्था युक्त पुरुष को (विन्दते) प्राप्त होवें। इसलिये स्त्रियों को भी ब्रह्मचर्य्य और विद्या का ग्रहण अवश्य करना चाहिये। महर्षि दयानन्द के इन वाक्यों से दलित स्त्रियों सभी स्त्रियों को अध्ययन वा वेदाध्ययन का पूर्ण अधिकार सिद्ध होता है। यह एक प्रकार से ईश्वरीय न्यायालय का अकाट्य निर्णय है जिसकी अवहेलना नहीं की जा सकती। इसकी उपेक्षा करने वाले ईश्वरीय न्याय व्यवस्था के दोषी व अपराधी सिद्ध होते हैं।

महर्षि दयानन्द ने प्रश्न किया है कि (सभी) स्त्री लोग भी वेदों को पढ़ें? इसका उत्तर वह लिखते हैं कि अवश्य, देखो श्रौतसूत्रादि में **'इमं मन्त्रं पत्नी पठेत्।'** लिखा है। अर्थात् स्त्री यज्ञ में इस मंत्र को पढ़े। जो वेदादिशास्त्रों को न पढ़ी हो तो यज्ञ में स्वरसहित मंत्रों का उच्चारण और संस्कृत भाषण कैसे कर सके? भारत वर्ष की स्त्रियों में भूषणरूप गार्गी आदि वेदादि शास्त्रों को पढ़के पूर्ण विदुषी हुई थीं, यह शतपथ ब्राह्मण में स्पष्ट लिखा है। भला जो पुरुष विद्वान् और स्त्री अविदुषी और स्त्री विदुषी और पुरुष अविद्वान् हो तो नित्यप्रति घर में देवासुर संग्राम मचा रहे। फिर सुख कहां? इसलिये जो स्त्री न पढ़ें तो कन्याओं की पाठशाला में अध्यापिका क्यों कर हो सकें तथा राजकार्य न्यायाधीशत्वादि एवं गृहाश्रम का कार्य्य जो पति को स्त्री और स्त्री को पति द्वारा प्रसन्न रखना, घर के सब काम स्त्री के आधीन रहना, (यह सभी काम) बिना विद्या इत्यादि के अच्छे प्रकार कभी नहीं हो सकते। यहां महर्षि दयानन्द ने शतपथ ब्राह्मण से गार्गी का उदाहरण व प्रमाण देकर स्त्रियों को वेदाधिकार का वाद पौराणिक सनातन धर्मियों से जीत लिया है। महर्षि दयानन्द की यह भी विशेषता है कि उन्होंने अपने सिद्धान्त व मान्यतायें हिन्दी में लिखीं हैं जिसे पांचवी कक्षा तक हिन्दी पढ़ा व्यक्ति भी समझ सकता है और बड़े बड़े पण्डितों से मनवा सकता है और ऐसा ही हुआ भी है।

अपनी बात को प्रमाणित करने के लिए महर्षि दयानन्द ने अन्य उदाहरण देकर सभी वर्णों की स्त्रियों की उन्नति हेतु उपदेश भी किये हैं। वह कहते हैं कि देखो, आर्य्यावर्त्त के राजपुरुषों की स्त्रियां धनुर्वेद अर्थात् युद्धविद्या भी अच्छी प्रकार जानती थी, क्योंकि जो न जानती

क्रमशः पृष्ठ 5 पर...

दलित स्त्रियों के उत्थान में..... पृष्ठ 4 का शेष.....

होती तो केकेयी आदि दशरथ आदि के साथ युद्ध में क्यों कर जा सकती? और युद्ध कर सकती? इसलिये ब्राह्मणी और क्षत्रिया को सब विद्या, वैश्या को व्यवहार विद्या, और शूद्रा को पाकादि व सेवा की विद्या अवश्य पढ़नी चाहिये। जैसे पुरुषों को व्याकरण, धर्म और अपने व्यवहार की विद्या न्यून से न्यून अवश्य पढ़नी चाहिये, वैसे स्त्रियों को भी व्याकरण, धर्म, वैद्यक, गणित, शिल्पविद्या तो अवश्य ही सीखनी चाहिये। क्योंकि इनके सीखे बिना सत्यासत्य का निर्णय, पति आदि से अनुकूल वर्त्तमान यथायोग्य सन्तानोत्पत्ति, उनका पालन, वर्धन और सुशिक्षा करना, घर के सब कार्य्यों को जैसा चाहिये वैसा करना कराना, वैद्यकविद्या से औषधवत् अन्न-पान बना और बनवाना नहीं कर सकती। जिससे घर में रोग कभी न आवें और सब लोग आनन्दित रहे। शिल्पविद्या के जाने बिना घर का बनवाना, वस्त्र-आभूषण आदि का बनाना व बनाना, गणितविद्या के बिना सबका हिसाब समझना-समझाना, वेदादिशास्त्र विद्या के बिना ईश्वर और धर्म को न जान के अधर्म से कभी नहीं बच सके। इसलिये वे ही (स्त्रियां) धन्यवादार्ह और कृतकृत्य हैं कि जो अपने सन्तानों को ब्रह्मचर्य, उत्तम शिक्षा और विद्या से शरीर और आत्मा के पूर्ण बल को बढ़ावें। जिससे वे सन्तान मातृ, पितृ, पति, सासु, श्वसुर, राजा, प्रजा, पड़ोसी, इष्ट, मित्र और सन्तानादि से यथायोग्य धर्म से वर्त्ते। यही कोश अक्षय है। इसको जितना व्यय करें, उतना ही बढ़ता जाये। अन्य सब कोश व्यय करने से घट जाते हैं और दायभागी भी निज भाग लेते हैं और विद्याकोश का चोर वा दायभागी कोई भी नहीं हो सकता। इस कोश की रक्षा और वृद्धि करने वाला विशेष राजा और प्रजा भी हैं।

सभी शूद्र स्त्री व पुरुषों को वेदों का अधिकार मिल जाने से ब्राह्मणों का एकाधिकार समाप्त होता है। सभी शूद्र कहाने वाले बन्धु ब्राह्मणों की स्थिति में आ जाते हैं। अब जो अधिक ज्ञान प्राप्त कर सकेगा वही समाज में अधिक प्रतिष्ठित होगा चाहे वह ब्राह्मण सन्तान हो या शूद्र-सन्तान। किसी के साथ पक्षपात नहीं होगा। यहां यह उल्लेख कर दें कि महर्षि दयानन्द ने सत्यार्थ प्रकाश में सभी वर्णों के बालकों के लिए एक समान, निःशुल्क एवं अनिवार्य शिक्षा की वकालत की है। वह लिखते हैं कि राजपुत्र व निर्धन व्यक्ति के पुत्र के साथ समान व्यवहार हो। इस प्रकार से शिक्षा में वह सभी को समानता का दर्जा देते हैं जिससे पक्षपात का प्रश्न ही नहीं होता। आर्यसमाज ने अपने गुरुकुलों में यह अधिकार निष्पक्ष रूप से दलितों सहित सभी लोगों को प्रदान किया है व आज भी किये हुए है। इस कारण अनेक शूद्र भाई व बहिनें वेदों के बड़े बड़े पण्डित-पण्डिता बनीं हैं।

अब हम महर्षि दयानन्द जी के कुछ क्रियात्मक कार्यों का उल्लेख करते हैं। बहुत से लोग ऐसे होते हैं कि जो वाणी से तो समर्थन करते हैं परन्तु अपने आचरण व क्रिया में वैसा नहीं करते। महर्षि दयानन्द का जीवन ऐसा नहीं है। वह जो कहते व मानते उसे करके दिखाते हैं। महर्षि दयानन्द सन् 1875 में पूना गये और वहां उन्होंने लगभग 50 से अधिक उपेदश दिये। इन उपदेशों में वहां के कई समाज सुधारक उपस्थित होते थे जिनमें से एक थे श्री ज्योतिबा फूले (1827-1890)। 1 जनवरी 1848 को आपने पुणे में एक कन्या पाठशाला खोली थी। आधुनिक भारत के इतिहास में कन्या पाठशाला स्थापित करने वाले आप ही पहले भारतीय थे। इसलिये उन्हें 'भारतीय स्त्री-शिक्षा का जनक' कहा जाता है। भारतीय स्त्री को सर्वविध दासता से मुक्त कराने के लिए वे हमेशा संघर्षरत रहे। विधवा-विवाह एवं अन्तरर्जातीय विवाह के भी वे समर्थक थे। पाखण्ड एवं जातीयता के वे कट्टर विरोधी और शराबबन्दी के पक्षधर थे। महात्मा फूले स्वामी दयानन्द जी द्वारा दिये 50 से अधिक व्याख्यानों में अतिवृष्टि के दिनों में अपवाद को छोड़कर अपने सत्यशोधक समाज के सदस्यों के साथ व्याख्यान में उपस्थित रहे थे। महर्षि दयानन्द की प्रगतिशील विचारधारा से प्रभावित होकर उन्होंने शुक्रवार 16 जुलाई, 1875 को सायं सात बजे अपनी मोमिनपुरा में स्थित शूद्रातिशूद्रों की पाठशाला में महर्षि का वेद-प्रवचन आयोजित किया था। यद्यपि इस व्याख्यान में कहे शब्द उपलब्ध नहीं है परन्तु अनुमान से कह सकते हैं कि महर्षि दयानन्द ने कन्याओं की शिक्षा का महत्व, सभी मनुष्यों वा स्त्री-पुरुषों की समानता, श्रेष्ठ गुण-कर्म-स्वभाव का संक्षिप्त परिचय, छुआछूत मानवता पर कलंक, इतिहास प्रसिद्ध शिक्षित भारतीय नारियों गार्गी, अनुसूया, मदालसा, सीता आदि का उल्लेख, ब्रह्मचर्य पालन, बालविवाह की हानियों, पूर्ण युवावस्था में विवाह, वेदों का महत्व, रूढ़ियों व कुरीतियों का खण्डन, शिक्षित माता की सन्तान को सुशिक्षित करने में भूमिका, शिक्षित महिला का शिक्षित पति से सौहार्दपूर्ण व्यवहार, वेद विद्या में अनन्त आनन्द जैसे विषयों की चर्चा की होगी। एकेश्वरवाद, शूद्रातिशूद्रों और स्त्रियों की शिक्षा इत्यादि विषयों में महर्षि से वैचारिक ऐक्य होने के कारण और रूढ़िवादियों के साथ संगठित शक्ति के रूप में मुकाबला करने के लिए महात्मा फुले अपने अनुयायियों के साथ महर्षि के पुणे-प्रवचनों और शोभायात्रा में सदल-बल शामिल हुए थे। महर्षि दयानन्द जी ने 1867 में कर्णवास में हंसादेवी ठाकुर को 'गायत्री मन्त्र' का अधिकार प्रदान किया था। मुम्बई के फोटोग्राफर हरिश्चन्द्र चिन्तामणि के सुपुत्र का यज्ञोपवीत संस्कार सन् 1876 में महर्षि की उपस्थिति में सम्पन्न हुआ था। महाराष्ट्रीय विदुषी पण्डिता रमाबाई को महर्षि ने सन् 1880 में न्याय और वैशेषिक दर्शन के सूत्र इस आशा के साथ पढ़ाये थे कि-यह देवी शास्त्रज्ञ बनकर भारतीय महिला वर्ग की उन्नति में अपना योगदान कर सकेगी। उन्होंने पण्डिता रमाबाई को परोपकार के लिए अपना जीवन उत्सर्ग करने के प्रबल प्रेरणा भी दी थी। लेखन द्वारा महर्षि दयानन्द ने स्त्रियों की शिक्षा पर सत्यार्थ प्रकाश में जो कहा है, उसका वर्णन हम पूर्व ही कर चुके हैं। इस प्रकार हम देखते है कि महर्षि ने ज्योतिबा फूले की शूद्रातिशूद्र कन्याओं की पाठशाला में वेद प्रचचन करके ऐतिहासिक कार्य किया। यह स्मरणीय है कि मध्यकाल में स्त्रियों व शूद्रों के वेदमन्त्र का उच्चारण करने व सुन लेने मात्र पर कठोर अमानवीय दण्ड का प्रावधान था। यहां महर्षि स्वयं ही कन्याओं को वेदमन्त्रों का उच्चारण कर उन में निहित शिक्षाओं से उन्हें परिचित करा रहे थे। महर्षि दयानन्द का यह कार्य भी दलित स्त्रियों के उद्धार व उत्थान में एक प्रेरणादायक कार्य था जिसने पौराणिकों को इस विशय में सोचने पर मजबूर किया था और बाद के दिनों में हम देखते हैं कि पौराणिकों ने अपनी पूर्व प्रतिज्ञाओं का पूर्णतः त्याग कर दिया।

यहां हम इस बात का भी उल्लेख करना चाहते हैं कि महर्षि दयानन्द ने सभी कन्याओं को ब्रह्मचर्य व्रत धारण कर वेदाध्ययन का अधिकार दिया है। वेदाध्ययन के लिए वेदारम्भ व उपनयन संस्कार होना आवश्यक है। इस संस्कार से ब्रह्मचारी व ब्रह्मचारिणी द्विज बनते हैं। द्विज बालिका व बालक दलित व शूद्र नहीं होते। अतः अपने आप में यह सभी ब्रह्मचारिणियों की प्रगति का प्रमाण है। महर्षि दयानन्द व उनके अनुयायियों ने गुरुकुल खोलकर महर्षि दयानन्द के स्वप्नों को साकार किया है। आज आर्यसमाज द्वारा बड़ी संख्या में कन्याओं के गुरुकुल चलाये जा रहे हैं जहां सभी वर्णों की कन्यायें बिना किसी भेदभाव के वेदारम्भ व उपनयन संस्कार कराकर वेदाध्ययन करती हैं और द्विजत्व को धारण करती है। आर्यजगत की वेदविदुषी सूर्यदेवी चतुर्वेदालंकृता कई धार्मिक विषयों पर निर्णय के लिए वेदविरुद्ध घोषणा करने वाले शंकराचार्य आदि विद्वानों को संस्कृत में शास्त्रार्थ करने की चुनौती दे चुकी हैं। अतः महर्षि दयानन्द ने दलित व सभी वर्णों की नारियों को वेदविदुषी बनाकर इतिहास में नई परम्परा को जन्म दिया जो आज भी सफलतापूर्वक चल रही है। महर्षि दयानन्द विवाह में जन्मना जाति के पक्षधर न होकर गुण-कर्म-स्वभाव की समानता के पक्षधर थे। जिससे देश से जातिवाद की हानिकारक समस्या का समाधान होता है। उनका यह प्रयास भी फलीभूत हुआ है और आज गुण-कर्म-स्वभाव पर आधारित विवाह बड़ी संख्या में समाज में प्रचलित हो चुके हैं। इसमें कहीं न कहीं महर्षि दयानन्द की प्रेरणा कार्य कर रही है। क्रमशः अगले अंक में.....

वीतराग महात्मा प्रभुआश्रित साधनास्थली

वैदिक भक्ति साधन आश्रम, आर्यनगर, रोहतक-124001

फोन : 01262-253214

सामवेद ब्रह्मपारायण महायज्ञ

शुक्रवार 31 जुलाई 2015 से रविवार 2 अगस्त 2015 तक

सभी गुरुभक्तों एवं यज्ञ प्रेमियों को यह जानकर अति हर्ष होगा कि वैदिक भक्ति साधन आश्रम, आर्यनगर, रोहतक में महात्मा प्रभुआश्रित जी की गुरुपूर्णिमा के उपलक्ष्य में सामवेद ब्रह्मपारायण महायज्ञ का आयोजन बड़े ही हर्षोल्लास के साथ किया जा रहा है। इस शुभ अवसर पर आप सब परिवार एवं मित्रों सहित सादर आमन्त्रित हैं।

प्रवचन स्वामी अमृतानन्द जी महाराज

यज्ञब्रह्मा : आचार्य नरेन्द्र मैत्रेय

यज्ञ आरम्भ : 31 जुलाई 2015 प्रातः 6.30 बजे

यज्ञ, भजन, उपदेश : 6.30 से 9 बजे तक तथा सायं : 3.30 से 6 बजे तक

पूर्णाहुति 2 अगस्त 2015 प्रातः 11 बजे होगी। तत्पश्चात् ऋषिलंगर

—वेदप्रकाश आर्य, मन्त्री 9416211809

परमेश्वर की प्राप्ति के लिए भी मार्ग योग से होकर गुजरता है

❑ कृष्ण वोहरा, म.नं. 641, जेल ग्राउण्ड, सिरसा

21 जून को विश्व के 192 देशों में योग दिवस मनाया गया। लाखों लोगों ने विभिन्न प्रकार के योग किये। समाचार-पत्रों ने स्थान-स्थान के योग सम्बन्धी चित्र प्रकाशित किये। लेकिन अगले दिनों में योग सम्बन्धी चित्र समाचार पत्रों से गायब हो गए। क्या केवल एक दिन के लिए योग का महत्त्व था? योग जीवन भर के लिए है। जीवन को सुखी निरोगी बनाने में योग लाभकारी है। योग केवल व्यायाम नहीं है, बल्कि एक पूर्ण चिकित्सा पद्धति है। योग भारत की प्राचीन संस्कृति और परम्परा का यशोगान है। अच्छी जीवन पद्धति के लिए यह ऐसा जुनून है जिससे हम भारतीय भी बहुत कुछ सीख सकते हैं। हमारे देश में लाखों लोग रक्तचाप, हृदयाघात, मधुमेह, अवसाद आदि बीमारियों से पीड़ित हैं। इनसे छुटकारा योग द्वारा ही सम्भव है। प्रात:काल जल्दी उठकर किसी पार्क में जाकर योग करने से ही बीमारियों से छुटकारा मिल सकता है। इसलिए योग केवल एक दिन के लिए नहीं है बल्कि वर्ष भर के लिए है।

योग जोड़ता है। अपने भीतर झांकने का अवसर प्रदान करता है। योग संवाद है। आज दुनिया योग के नाम को सार्थक करते हुए जुड़ रही है। 'वसुधैव कुटुम्बकम्' का स्वप्न साकार करने की क्षमता योग में है। योग के आठ अंग हैं—यम, नियम, आसन, प्राणायाम, प्रत्याहार, धारणा, ध्यान और समाधि। ये आठों मन और आत्मा को परमात्मा से एकाकार करने का मार्ग बताते हैं और इस एकाकार को ही हम योग कहते हैं।

श्री श्री रविशंकर जी का कहना है कि योग एक जीवनशैली है और इसे सिर्फ आसन समझना गलत है। बीमारी मुक्त शरीर, हिचकिचाहट से मुक्त आवाज, चिंतामुक्त दिमाग, आत्मविश्वास से भरा व्यक्तित्व और सोच, आसक्ति मुक्त यादें, अहंकार से बहुत दूर और दु:खों से मुक्त आत्मा ही एक श्रेष्ठ योगी के लक्षण हैं।

इसी प्रकार बाबा रामदेव जी का कहना है कि महर्षि पतञ्जलि और गुरु गोरखनाथ द्वारा समृद्ध बनाई गई इस वैज्ञानिक पद्धति को आज अपनाने की आवश्यकता है। स्कूलों, कॉलेजों और विश्वविद्यालयों में पढ़ने वाले छात्रों एवं छात्राओं को योग शिक्षा दी जाए। अस्पतालों में इसे एक चिकित्सा पद्धति के रूप में स्वीकार किया जाए।

योग का अन्तिम लक्ष्य है कि हम परम आनन्द को प्राप्त हों। इससे खुशियां बढ़ती हैं। ये खुशियां ऐसी हैं जो अन्दर से प्रकट होती हैं। खुशियों का स्रोत हमारे अन्दर है और कभी समाप्त नहीं होता।

इस प्रकार यह सत्य है कि केवल एक दिन के लिए योग नहीं है, योग जीवन भर के लिए है। परेश्वर की प्राप्ति के लिए मार्ग योग से होकर गुजरता है।

ओ३म्

प्रभु की इच्छा

इक न दिक दिन सबको जाना है फना के सामने,
चल नहीं सकती किसी की कुछ कजा के सामने।
छोड़नी होगी यह दुनिया सबको फानी एक दिन,
हर कोई मजबूर है हुक्मे खुदा के सामने।
धैर्य्य ही रखना है जालिम ऐ बशर! तुमको सदा,
रंजो गम में और अलम में हर बला के सामने।
आशावादी बन सदा और रख प्रभु का आसरा,
रख तूं अपनी मुश्किलें मुश्किल कुशा के सामने।
वह प्रभु है सबका रक्षक उसकी महिमा को न भूल,
सिर झुका तू हर समय परमात्मा के सामने।
बच बुराइयों से सदा तू नेकियों से प्यार कर,
आयेंगे एहमाल तेरे सब खुदा के सामने।
अपने कर्मों के मुताबिक आते हैं सुख-दु:ख सभी,
राजी रह तू हर समय प्रभु की इच्छा के सामने।
वक्त है अब भी संभल चल धर्म के ही मार्ग पर,
हाजतें अपनी तू रख हाजत रवा के सामने।
छोड़ेगी न मौत हरगिज चाहे जी ले साल सौ,
'सेवक' इक दिन सबको जाना है फना के सामने।
प्यारे प्रभु से दिल लगाना भी सीख ले।
हम कौन हैं? क्या हैं? भेद यह पाना भी सीख ले।
पढ़ करके चारों वेद हम जीवन सुधार लें।
मन का अंधेरा आप मिटाना भी सीख लें।
वैदिक धर्म को भूल अधर्मी जो बन रहे।
गिरते हुओं को अब तो उठाना भी सीख लें।
पंथों के पाखण्ड में, सब कुछ लुटा रहे।
पापों की जाल से इन्हें बचाना भी सीख लें।
भटके जो सत्य मार्ग से खाते हैं ठोकरें।
उनका धर्म का मार्ग दिखाना भी सीख ले।
मन के सम्भालने से सम्भलता है आदमी।
चंचल बड़ा यह मन है, टिकाना भी सीख ले।
दीन और दुखी की सेवा में दिन रात हम रहें।
'सेवक' के गुण को जीवन में लाना भी सीख लें।

भेंटकर्ता : सूबेदार करतारसिंह आर्य 'सेवक' आर्यसमाज गोहाना मण्डी (सोनीपत)

आत्मिक शांति के लिये शुद्धता से करें आह्वान
प्रसन्न हो आशीर्वाद देंगे भगवान

शुद्ध एम डी एच

हवन सामग्री

शुभ दिनों, शुभ कार्यों एवं पावन पर्वों में शुद्ध घी के साथ, शुद्ध जड़ी-बूटियों से निर्मित एम डी एच हवन सामग्री का प्रयोग कीजिये। शुद्धता में ही पवित्रता है। जहां पवित्रता है वहां भगवान का वास है, जो एम डी एच हवन सामग्री के प्रयोग से सहज ही उपलब्ध है।

अलौकिक सुगंधित अगरबत्तियां

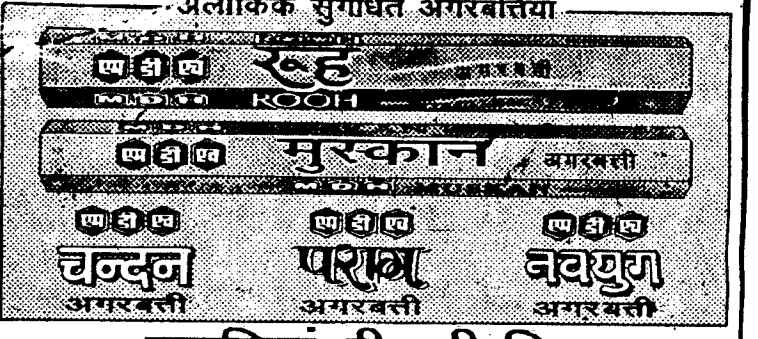

महाशियां दी हट्टी लि०
एम डी एच हाउस, 9/44, कीर्ति नगर, नई दिल्ली-15 फोन : 5937987, 5937341, 5939609
ब्रांचेज : • दिल्ली • गाजियाबाद • गुड़गांव • कानपुर • कलकत्ता • नागौर • अमृतसर

मै० कुलवन्त पिक्कल स्टोर, शाप नं० 115, मार्किट नं० 1, एन.आई.टी., फरीदाबाद 121001 (हरि०)
मै० मेवाराम हंसराज, किराना मर्चेन्ट, रेलवे रोड, रिवाड़ी-123401 (हरि०)
मै० मोहनसिंह अवतारसिंह, पुरानी मण्डी, करनाल-132001 (हरि०)
मै० ओम्प्रकाश सुरिन्द्र कुमार, गुड़ मण्डी, पानीपत-132103 (हरि०)
मै० परमानन्द साईं दित्तामल, रेलवे रोड, रोहतक-124001 (हरि०)
मै० राजाराम रिक्खीराम, पुरानी अनाज मण्डी, कैथल-132027 (हरि०)

खांडा खेड़ी (हिसार) में आर्य वीर दल का प्रशिक्षण शिविर आयोजित

परम मित्र वैदिक गुरुकुल खांडा खेड़ी (हिसार) में 25 जून से 30 जून तक आर्य वीर दल का प्रशिक्षण शिविर आयोजित किया गया। गुरुकुल के प्राचार्य आचार्य राजकिशोर शास्त्री और परम मित्र विद्या निकेतन के प्राचार्य देवेन्द्र जी के कुशल मार्गदर्शन में यह शिविर सफ्लतापूर्वक सम्पन्न हुआ। परम मित्र मानव निर्माण संस्थान द्वारा आयोजित आर्य वीर दल के इस शिविर में अनेक गाँवों से 100 के लगभग आर्यवीरों ने प्रशिक्षण प्राप्त किया।

भारतीय संस्कृति रक्षा दल के राष्ट्रीय अध्यक्ष स्वामी ब्रह्मानन्द द्वारा ध्वजारोहण के साथ शिविर का उद्घाटन किया गया। इस अवसर पर उन्होंने आर्यवीरों को सम्बोधित करते हुए कहा कि केवल आर्य समाज और उसका युवा संगठन आर्य वीर दल ही युवाओं को सही दिशा में आगे ले सकता है। वैदिक विचारधारा पर चलकर ही हम अपने जीवन को श्रेष्ठ बना सकते हैं।

आर्य वीर दल जीन्द के मण्डलपति यज्ञवीर आर्य और आर्य वीर दल के अन्य सुयोग्य व्यायाम शिक्षकों श्याम आर्य, मनीष आर्य, संदीप आर्य, नन्दकिशोर आर्य के निर्देशन में आर्य वीरो ने सर्वांगसुन्दर व्यायाम, लाठी, तलवार, छुरी, भाला, आसन और प्राणायाम आदि का प्रशिक्षण प्राप्त किया। शिविर में आत्मिक विकास के लिए प्रतिदिन संध्या हवन का कार्यक्रम हुआ। साथ ही भारतीय संस्कृति, इतिहास और आदर्शों के बारे में भी बताया गया।। शिविर के दौरान विभिन्न दिनों में आर्य विद्वानो के प्रवचनों एवं उपदेशों से आर्यवीरों को बौद्धिक और आध्यात्मिक ज्ञान प्राप्त हुआ। आर्य वीर दल हरयाणा के पूर्व उपसंचालक और आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के उपमंत्री प्रो. ओमकुमार आर्य ने भी आर्य वीरों को बौद्धिक कार्यक्रम में सम्बोधित करते हुए उन्हें आर्य सिद्धान्तो के विषय में बताया।

भारतीय जनता पार्टी के नारनौंद हल्का प्रभारी अजय सिंधु ने भी शिविर का दौरा कर आर्यवीरों का उत्साह बढ़ाया। उन्होंने आर्यवीरों को हमेशा सत्य के मार्ग पर चलने और अपने जीवन में वैदिक सिद्धान्तों के लिए प्रेरित किया। 29 जून को गाँव में शोभायात्रा का आयोजन किया गया। गीतों और नारों ने सभी में जोश और उत्साह का संचार किया। सभी लोगो ने गुरुकुल में आयोजित युवा निर्माण के इस शिविर की प्रशंसा की।

30 जून को शिविर का समापन हुआ। इस अवसर पर गुरुकुल कालवा से स्वामी सोमानन्द, भारतीय संस्कृति रक्षा दल के राष्ट्रीय अध्यक्ष स्वामी ब्रह्मानन्द, परम मित्र वैदिक गुरुकुल खांडा खेड़ी के पूर्व प्राचार्य आचार्य अजय जी आर्य, परम मित्र विद्या निकेतन के प्राचार्य देवेन्द्र जी, बी. एड. कॉलेज की प्रिंसीपल डा. सुनीला मालिक सहित विद्यालय के स्टॉफ के अनेक सदस्य, आर्य समाज के अधिकारी गण और गाँव के गणमान्य व्यक्ति उपस्थित थे। आर्यवीरों ने अपने प्रदर्शन से सभी को रोमांचित कर दिया। कार्यक्रम के अंत में आर्यवीरों को पुरस्कार वितरित किये गए। भगवान दास आर्य, विजेन्द्र आर्य, विजय आर्य आदि कार्यकर्ताओं और सहयोगियों ने रात-दिन मेहनत कर शिविर को सफल बनाया।

गुरुकुल कुरुक्षेत्र के 58 खिलाड़ियों का स्पैट में चयन

गुरुकुल के राज्य में स्पैट के लिए सबसे अधिक खिलाड़ी चयनित

कुरुक्षेत्र 15 जुलाई, 2015 गुरुकुल कुरुक्षेत्र के 58 खिलाड़ियों का चयन स्पैट के लिए किया गया है। यह जानकारी गुरुकुल के प्राचार्य डॉ. देवव्रत आचार्य ने दी।

उन्होंने बताया कि अम्बाला कैंट के स्टेडियम में प्ले फॉर इण्डिया द्वारा स्पैट प्रतियोगिता का आयोजन किया गया, जिसमें हरियाणा शिक्षा बोर्ड व केन्द्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड दिल्ली से सम्बद्ध विद्यालयों के 3000 खिलाड़ियों ने भाग लिया। इन खिलाड़ियों में कुरुक्षेत्र जिले के 180 खिलाड़ियों में से 71 खिलाड़ियों का चयन किया गया । इनमें अकेले गुरुकुल कुरुक्षेत्र के 58 खिलाड़ी शामिल हैं। गुरुकुल के चयनित खिलाड़ियों के 8 से 14 आयु वर्ग में 54 तथा 15 से 19 आयु वर्ग में चार खिलाड़ी शामिल हैं। प्राचार्य ने बताया कि 8 से 14 आयु वर्ग के प्रत्येक चयनित खिलाड़ी को 1500 रुपए तथा 15 से 19 आयु वर्ग के प्रत्येक चयनित खिलाड़ी को 2000 रुपए प्रतिमाह छात्रवृत्ति एक वर्ष तक प्रदान की जाएगी।

गुरुकुल के चयनित खिलाड़ियों ने अपनी प्रतिभा का लोहा मनवाते हुए सभी खिलाड़ियों को पछाड़ते हुए स्पैट प्रतियोगिता के अण्डर 14 व 19 आयु वर्ग में मैरिट सूची में स्थान अर्जित कर गुरुकुल कुरुक्षेत्र, जिले व राज्य का नाम रोशन किया है।

गुरुकुल प्रबन्ध समिति के प्रधान कुलवन्त सिंह सैनी, प्राचार्य डॉ. देवव्रत आचार्य व उप-प्राचार्य शमशेर सिंह सांगवान ने खेल प्रशिक्षक देवीदयाल व सभी विजेता खिलाड़ियों को इस शानदार उपलब्धि के लिए बधाई व शुभकामनाएँ दीं।

भूकम्प-पीड़ित (नेपाल) हेतु सहायता राशि

क्र.सं.	नाम व पता	राशि
1.	आर्यसमाज गोहानामण्डी जिला सोनीपत द्वारा सूबेदार करतारसिंह आर्य	11,000-00
2.	श्री बलवीर आर्य गांव मोई हुड्डा जिला सोनीपत	121-00
3.	श्री सूबेसिंह आर्य, गांव खरकड़ा जिला रोहतक	1,500-00
4.	राजपाल यज्ञ समिति, गाँव बुआना लाखू, जिला पानीपत	500-00
5.	आर्यसभाज सिहोर, जिला महेन्द्रगढ़	300-00
6.	श्री कन्हैयालाल आर्य सभा कोषाध्यक्ष द्वारा	83,000-00
7.	गुरुकुल झज्जर, जिला झज्जर	15,000-00
8.	श्री शमशेरसिंह आर्य, गांव धर्मगढ़ जिला जीन्द	1,100-00

चतुर्मास अर्थात् चौमासे में फैली... पृष्ठ 2 का शेष...

का निरादर है। ईश्वर में विश्वास और श्रद्धा न होने से लोग इस तरह की सोच रखते हैं, जो पाप है। ईश्वर के कार्य में शंका करना स्वयं को नास्तिकता की ओर ले जाना है स्वयं ही निर्णय करे कि आप कौन हैं? आस्तिक या नास्तिक ? पुनर्जन्म के सिद्धान्त को मानने से तो मृतक श्राद्ध की जड़ ही कट जाती है। शरीर से आत्मा का वियोग होने पर वह (आत्मा) अपने कर्मानुसार ईश्वरीय व्यवस्थानुसार नई योनि को प्राप्त करके शरीर धारण कर लेता है और तदनुरूप सुख-दु:ख भोगने को विवश होता है। कौन कहाँ गया, किसी को पता नहीं। इसीलिए कहा जाता है **सब जीते जी का नाता है, मरने के बाद कोई किसी का नहीं रहता।** मृत्यु के बाद जो कुछ परिवार वाले करते हैं, अपनी लोक प्रसिद्धि के लिए करते हैं। मृतक का उससे कोई हित नहीं, कोई लेना-देना नहीं होता, जो जीता है, अपनेलिए जीता है, सबको अपने-अपने कर्मों (संचित, प्रारब्ध और वर्तमान कर्मो) का ही फल मिलता है।

संपर्क-चरित्र निर्माण मण्डल, सैनी मोहल्ला, ग्राम शाहबाद, मोहम्मदपुर, नई दिल्ली-61 मो० 9871644195

भजनोपदेशकों के लिए सभा से सम्पर्क करें—

प्रदेश की सभी आर्यसमाजें अपने आर्यसमाज के वार्षिकोत्सव या अन्य विशेष कार्यक्रमों के लिए भजनोपदेशकों के प्रोग्राम सुनिश्चित करने के लिए आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा दयानन्दमठ रोहतक से एक मास पूर्व पत्र द्वारा सम्पर्क करें।

—सभामन्त्री

गुरुकुल कालवा (जीन्द) में आर्यवीर दल का प्रशिक्षण शिविर आयोजित

गुरुकुल कालवा (: न्द) में 15 जून से 21 जून 2015 तक आर्य वीर दल का प्रशिक्षण शिविर आयोजित किया गया। गुरुकुल कालवा के आचार्य राजेन्द्र जी, स्वामी वेदरक्षानन्द जी, स्वामी सोमानन्द जी और आचार्य कर्मवीर मेधार्थी के कुशल मार्गदर्शन में यह शिविर अभूतपूर्व सफलता के साथ सम्पन्न हुआ। आर्य वीर दल जीन्द के इस जिला स्तरीय शिविर में अनेक गाँवों से 400 के लगभग आर्य वीरों ने प्रशिक्षण प्राप्त किया।

शिविर के उद्घाटन अवसर पर आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के प्रधान आचार्य विजयपाल जी, आर्य वीर दल हरयाणा के महामन्त्री वेदप्रकाश आर्य, गुरुकुल इन्द्रप्रस्थ के आचार्य ऋषिपाल जी आर्य, आर्य वीर दल के वरिष्ठ व्यायाम शिक्षक हरिसिंह आर्य मौजूद रहे। ध्वजारोहण के द्वारा शिविर का उद्घाटन किया गया।

आर्य वीर दल जीन्द के मण्डलपति व्यायाम शिक्षक यज्ञवीर आर्य और आर्य वीर दल के अन्य सुयोग्य व्यायाम शिक्षको विजय आर्य (मध्य-प्रदेश), महावीर आर्य (पानीपत), छत्रपाल आर्य (करनाल), नरेन्द्र आर्य (बागपत), फरीदाबाद के शिक्षकों श्याम आर्य, मनीष आर्य, संदीप आर्य, सचिन आर्य के निर्देशन में आर्य वीरो ने सर्वांगसुन्दर व्यायाम, लाठी, तलवार, छुरी, भाला, आसन आदि का प्रशिक्षण प्राप्त किया। गुडगाँव के कर्नल रघबीर सिंह ने आसन और प्राणायाम का प्रशिक्षण दिया। साथ ही उन्होंने एक्यूप्रेशर से सम्बंधित उपयोगी जानकारी भी आर्यवीरों को दी। आर्य वीर दल जीन्द के व्यायाम शिक्षक कर्णदेव शास्त्री एवं परम मित्र वैदिक गुरुकुल खांडा खेड़ी (हिसार) प्राचार्य आचार्य राजकिशोर शास्त्री ने भी समय निकालकर प्रशिक्षण कार्य में सहयोग दिया।

गुरुकुल कालवा के आचार्य और शिविर के आयोजक आचार्य राजेन्द्र ने बताया कि युवकों का चरित्र निर्माण और उन्हें सही दिशा देना आज के समय की सबसे बड़ी जरूरत है। बच्चों का सर्वांगीण विकास ही हमारा ध्येय है। इसी को ध्यान में रखते हुए गुरुकुल कालवा द्वारा सात दिवसीय व्यक्तित्व

विकास एवं चरित्र निर्माण शिविर का आयोजन किया गया। शिविर में आत्मिक विकास के लिए प्रतिदिन ब्रह्मयज्ञ (हवन) और देवयज्ञ (संध्या) का कार्यक्रम हुआ । साथ ही भारतीय संस्कृति, इतिहास और आदर्शों के बारे में भी बताया गया।। शिविर के दौरान विभिन्न दिनों में आर्य विद्वानों के प्रवचनों एवं उपदेशों से आर्यवीरों को बौद्धिक और आध्यात्मिक ज्ञान प्राप्त हुआ।

आर्य वीर दल हरयाणा के पूर्व उपसंचालक और आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के उप मंत्री प्रो. ओमकुमार आर्य, आर्य वीर दल हरयाणा के कोषाध्यक्ष कर्ण सिंह आर्य, आर्य वीर दल के शिक्षक शमशेर आर्य, वेद प्रचार मंडल जीन्द के पूर्व महामन्त्री रमेश आर्य, प्रचार मंत्री ईश्वर आर्य विभिन्न दिवसों में उपस्थित रहे।

19 जून को जीन्द के पुलिस अधीक्षक श्री अभिषेक जोरवाल ने गुरुकुल परिसर में चल रहे शिविर में युवाओं के प्रशिक्षण कार्यक्रम का निरीक्षण किया। वे काफी समय तक आर्यवीरों के बीच रहे और उनका उत्साहवर्धन किया। उन्होंने अपने उद्बोधन में भी युवाओं को लगातार आर्य समाज के संपर्क में रहने की प्रेरणा दी।

20 जून को पिल्लूखेड़ा मंडी में शोभा यात्रा का आयोजन किया गया। आर्य वीरों ने भव्य व्यायाम प्रदर्शन कर सभी का मन मोह लिया और लोगो को दाँतो तले अँगुली दबाने को मजबूर कर दिया। गीतों और नारों ने सभी में जोश और उत्साह का संचार किया। सभी लोगों ने गुरुकुल कालवा में आयोजित युवा निर्माण के इस कार्य की प्रशंसा की।

21 जून को अन्तर्राष्ट्रीय योग दिवस के अवसर पर शिविर का समापन हुआ। भारत स्वाभिमान के प्रान्तीय प्रभारी रहे त्रिलोक चन्द जी शर्मा समापन समारोह के मुख्य अतिथि थे। इस अवसर पर सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान एवं सरलता व विनम्रता के पर्याय आचार्य बलदेव जी का आशीर्वाद भी सभी को प्राप्त हुआ। उन्होंने सभी को संबोधित करते हुए कहा कि योग करने से हम जीवन भर निरोग रह सकते है। इससे हमें शारीरिक, आत्मिक और आध्यात्मिक बल मिलता है। इसलिए हमें योग को अपने दैनिक जीवन का अंग बनाना चाहिए। आर्यवीरों ने अपने प्रदर्शन से सभी को रोमांचित कर दिया। इस अवसर पर गुरुकुल कुम्भखेड़ा के कुलपति आचार्य आत्मप्रकाश, भारतीय संस्कृति रक्षा दल के राष्ट्रीय अध्यक्ष स्वामी ब्रह्मानन्द, स्वामी महेश आर्य, स्वामी कर्मपाल, आर्य समाज सफीदों के प्रधान यादविंद्र बराड़, मंत्री संजीव मुआना, जगदीश आर्य सहित अनेक गणमान्य व्यक्ति उपस्थित थे।

शिविर को सफल बनाने में पवन आर्य डाहौला, दयानन्द आर्य मुआना, रविन्द्र आर्य डाहौला, विक्रम आर्य गंगाना, सन्तराम आर्य, सुरेन्द्र आर्य, देवीप्रसन्न आर्य, सतबीर अत्री, सुनील आर्य, पवन आर्य भड़ताना आदि कार्यकर्ताओं और सहयोगियों ने और गुरुकुल कालवा के मनीष आर्य, भीम आर्य, ओंकार शास्त्री, वैद्य ज्ञानप्रकाश आर्य और अन्य ब्रह्मचारियों ने रात-दिन मेहनत कर शिविर को सफल बनाया।

—यज्ञवीर आर्य, मण्डलपति
आर्यवीर दल जीन्द 9255935328

आत्म उन्नति के साधन

- पैर फिसल जाए तो संभलना आसान है, परन्तु जुबान फिसल जाए तो संभलना कठिन है।
- जीवन है तो सब कुछ मिल जाता है किन्तु सब कुछ देकर भी जीवन नहीं मिलता।
- जहाँ प्यार होता है वहाँ नियम नहं होते, जहाँ नियम होता है वहाँ प्यार नहीं होता।
- किसी का मजाक उड़ाना परोक्ष में उसका अपमान करना है।
- कमजोर और गरीब होना संसार का दुर्भाग्य है। इसे श्रम और परिश्रम से दूर करें।
- यदि धन आपके वश में है तो आप सुख पायेंगे यदि आप धन के वश में हैं तो आपसे ज्यादा दु:खी धरती पर कोई नहीं।
- हर काम का एक निश्चित समय हाता है और हर समय का एक काम होता है।

—प्रभाशंकर, बी. 804, एनजीओ कालोनी, वनस्थलीपुरम, हैदराबाद

विशेष सूचना

आपका शुल्क समाप्त हो गया है।

आर्य प्रतिनिधि साप्ताहिक के सदस्यों से आग्रह है कि जिस माह आपका शुल्क समाप्त हो, कृपया उसी माह में अपना नवीन पंजीकरण शुल्क भेज दें ताकि आपकी सदस्यता समाप्त न हो और आपको आर्य प्रतिनिधि साप्ताहिक पत्रिका लगातार मिलती रहे। पत्रिका का वार्षिक शुल्क 150/- रु० व आजीवन शुल्क 1500/- रु० मनीआर्डर अथवा बैंक ड्राफ्ट द्वारा सम्पादक आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा दयानन्दमठ रोहतक के पते पर भेजें।

-संपादक

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के स्वामित्व में मुद्रक, प्रकाशक व सम्पादक **मा० रामपाल आर्य** ने दुर्गेश्वरी प्रिंटर्स, माता मन्दिर चौक, पाड़ा मोहल्ला, रोहतक से मुद्रित एवं कार्यालय, सिद्धान्ती भवन, दयानन्दमठ, रोहतक-124001 से प्रकाशित। पत्र में प्रकाशित लेखसामग्री से मुद्रक, प्रकाशक, सम्पादक का सहमत होना आवश्यक नहीं। प्रत्येक विवाद के लिए न्यायक्षेत्र रोहतक न्यायालय होगा। आपत्ति की अवधि प्रकाशन तिथि से एक माह के भीतर ही मानी जाएगी।